रविवार, दिनाँक **07-04-2024** को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

हरदम राहवे ध्यान, बली जी तुहाडे चरणां दा।

मैं स्वास स्वास नाम ध्यावां, बली जी तुहाडे चरणां दा।।

उठत बैठत स्वप्न जाग्रत, हरि चरणां चित्त लाँवां।

बली जी तुहाडे चरणां दा, हरदम राहवे ध्यान।।

कार विहार जगत दे सारे, ओ करेसन रघुनाथ जी प्यारे।

उन्हां दा नाम ध्याईं, बली जी तुहाडे चरणां दा हरदम राहवे ध्यान।।

कुटम्ब कबीला बन्धु प्यारे, हैन भैणों मतलब दे सारे।

इन्हां विच प्रीति न लाई, बली जी तुहाडे चरणां दा हरदम राहवे ध्यान।।

विषय विकारां विच चित्त न लांवीं, इन्हां कोलों तू बच के राहवीं।

ए हैन नरक दा द्वार, बली जी तुहाडे चरणां दा हरदम राहवे ध्यान।।

सुतियां नू बली जी आन जगाओ, संसार सागर दे विचों बचाओ।

नरकां तो बच जान, बली जी तुहाडे चरणां दा हरदम राहवे ध्यान।।

जे नरकां तों बचना चाहवो, महाबीर जी दी शरणी आओ।

ओ डुबियां नू आन तरान, बली जी तुहाडे चरणां दा हरदम राहवे ध्यान।।

जो महाबीर जी दा नाम ध्यावे, उपरों इक विमान जो आवे।

ओदे ते चढ़ के जान, बली जी तुहाडे चरणां दा हरदम राहवे ध्यान।।

झूठी दुनियां नाल प्रीत न लावो, महाबीर जी दी शरणी आवो।

ओ सच्चे घर पहुंचान, बली जी तुहाडे चरणां दा हरदम राहवे ध्यान।।

दासियां दी तुसीं सुनो पुकार, तुहाडे नाल है सब दा प्यार।

सिया राम लषण नू मिलाई, बली जी तुहाडे चरणां दा हरदम राहवे ध्यान।।

दासी दी हुण सुनो पुकार, बेड़ा कर दियो सब दा पार।

रघुनाथ जी दी चरणी बिठाई, बली जी तुहाडे चरणां दा हरदम राहवे ध्यान।।

इस भजन के अंतर्गत सजनों परोपकार प्रवृति श्री साजन जी, सर्व ब्रह्माण्ड के कल्याण हेतु सजन श्री शहनशाह हनुमान जी से प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि हे महाबीर जी ! आप सजनों की वृत्तियों को उलटाकर सीधे रास्ते पर ले आओ ताकि यह भवसागर से पार उतरने में सक्षम हो जायें। इस संदर्भ में सजनों हम पूछते हैं कि जब सजन श्री शहनशाह हनुमान जी हर जीव को मोक्ष के द्वार की ओर प्रशस्त करने हेतु तैयार हैं तो हम क्यों कर तैयार नहीं हैं? सजनों इसी अज्ञानता से ऊपर उठने के लिये इस भजन में आज के इन्सान के शारीरिक स्वभावों का वर्णन करते हुए, उसे आत्मा के गुणों से परिचित कराने का विधिवत् प्रयास किया गया है। इस सन्दर्भ में आज के मानव के लिये बनता है कि वह अपना आत्म-निरीक्षण कर इस बात को समझने का प्रयास करे कि इस भजन द्वारा जो हमें करने का निर्देश दिया गया है, क्या मैं उन वचनों अनुसार वैसा करने के लिये तत्पर हूँ या नहीं? अगर नहीं, तो जान लो कि मैं अपने जन्म का वैरी हूँ।

सजनों यदि ध्यान से समझो तो इस भजन में बड़ी सुन्दर और सरल युक्ति बताई गयी है। अतः इसके एक-एक शब्द के अर्थ को समझते जाओ और जिस प्रकार सच्चेपातशाह जी ने सुरत को आवाहन देते हुए सभी सजनों को सही मार्ग पर प्रशस्त होने के लिये वचन दिए हैं, उन वचनों के अनुसार अपना स्वाभाविक बदलाव ले आओ यानि अपनी सोच का तरीका वैसा ही अपना लो। जानो तभी आप विजयी हो सकते हो। मानो यह कोई कठिन बात नहीं है बल्कि हमने अपने स्वभावों में ऐसा शुभ परिवर्तन लाने की क्रिया को स्वतः ही कठिन बना रखा है क्योंकि हमारे ख़्याल को, हमारे मन को चारों तरफ से सांसारिक वासनाओं ने घेर रखा है। ऐसे में सुरत को इस चक्रव्यूह से बाहर निकलने का कोई मार्ग ही नज़र नहीं आ रहा। जानो यह बड़ी ही दयनीय हालत है। इस हालत से उबरने के लिये सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि समर्पित भाव से सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के सतवस्तु के कुदरती

ग्रन्थ में विदित सद्-विचारों अनुसार अपनी सुरत को साध लो और अफुरता में आ जाओ। यह सीधा संसारी फुरनों से आज़ाद होकर परम अर्थ के निमित्त निष्पाप जीवन जीने की कला है। हमें इस कला में प्रवीण होना है।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों हमें सुनिश्चित करना है कि हमारी दिनचर्या सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के विचारों के अनुकूल ही व्यतीत हो। ज्ञात हो सजनों कि इस कार्य की सिद्धि कोई अन्य हमसे नहीं करवा सकता अपितु खुद को खुद ही करना है। इसके लिए थोड़ी सी हिम्मत, थोड़ा सा पुरुषार्थ दिखाना होगा यानि आत्म-नियन्त्रण करना होगा और आत्म-नियन्त्रण को मजबूत बनाये रखने के लिए प्रति पल आत्मनिरीक्षण करना होगा कि कहीं मेरी सुरत द्वारा सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों की भंगता तो नहीं हो रही यानि मैं कहीं वचन भंग तो नहीं कर रहा? याद रखो कि अगर मैं वास्तव में ही वचन भंग कर रहा हूँ तो मुझे कभी भी आत्म-दर्शन प्राप्त नहीं हो सकता यानि अपने यथार्थ को नहीं जान सकता। ऐसे में सजनों जब किसी को अपने यथार्थ का ही परिचय नहीं है तो वह यथार्थतापूर्ण जीवन कैसे जी सकता है? जानो ऐसा इन्सान निर्विकारी जीवन जीने में सर्वदा अयोग्य रहता है। इस तरह विकारग्रस्त जीवन जीने पर उसके मन में सदा दुःख-सुख का खेल चलता रहता है जिसका प्रभाव उसके मन-मस्तिष्क को कमज़ोर कर देता है। परिणामतया बुद्धि मनुराज में जा गिरती है यानि बुद्धि पर इंसान का स्वामित्व समाप्त हो जाता है और मन स्वामी बन जाता है। फिर सजनों जब मन बौद्धिक शक्ति का स्वामी बन जाता है तो उस द्वारा दी गई मनमत इंसान को कहीं का नहीं छोड़ती। अतः मन पर सावधान रहना है ताकि वह किसी विध् भी हमारी बुद्धि या सुरत का हरण कर उसे लंका में न ले जाये अन्यथा तो अन्त परिणाम रावण के कुल जैसा भुगतना पड़ेगा।

सजनों इसी सचेती के लिये ही सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमें बार-बार कह रहा है कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों के प्रतिकूल मत चलियो, अन्यथा तो जो आगे खड्ड़ा है, उसमें गिर जाओगे। अब एक दफा गिर गये तो सम्भलना नामुमकिन सी बात हो जाएगी जो कि आज सबके साथ हुआ पड़ा है। हम पूछते हैं कि अगर इसी बुरी दीन-हीन अवस्था में पड़े रहे तो कलुकाल से किनारा कैसे करोगे? कलुकाल से किनारा नहीं हुआ तो परम आनन्द का अनुभव कहाँ से होगा? जो अनमोल मानव चोला चौरासी लाख योनियों के

बाद प्राप्त हुआ है, वह सफल कैसे होगा? निःसन्देह जीवन विफल हो जाएगा। इससे स्पश्ट होता है कि मुश्किल से मिले इस सुनहरी मौके को खोना महामूर्खता की बात है। इसी तथ्य के दृष्टिगत सजनों सच्चेपातशाह जी कहते हैं 'धर्म मत हारना रे, धर्म के ऊपर तन-मन-धन सब वारना रे'। अब धर्म क्या है? - जानो धर्म कहता है कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों पर सत्यनिष्ठा से बने रह अपना सर्वस्व कुर्बान कर दो। सजनो इतना सा करने पर आप धर्मज्ञ बन जाओगे और धर्मज्ञ के अन्दर तो त्याग-भावना मजबूत होती है। वह धर्म पर स्थिर रहने के लिये प्रसन्नतापूर्वक कुछ भी त्यागने के लिए तत्पर रहता है और मौत से भी नहीं घबराता। ऐसा सजन निर्भय होकर प्रसन्नतापूर्वक धर्म पर जान कुर्बान कर देता है, जैसा कि त्रेता में, द्वापर में हुआ और कलियुग में दसपातशाह जी ने कर दिखलाया। अन्य शब्दों में श्री रामचन्द्र जी ने धर्म पर स्थिर रहने के लिये ही बनवास स्वीकारा। ऐसे में सीता जी की तो कोई मजबूरी नहीं थी? पर उन्होंने भी पतिव्रत धर्म पर स्थिर रहने के लिये महल में रहने की बजाये यानि संसारी ऐश्वर्य भोगने की जगह पति के संग रहने का धर्म निभाया। इसी प्रकार लक्ष्मण को किसने बन जाने के लिये कहा? -

यह तो धर्म का आवाहन था जिसको सुनकर वह वन गए। क्या उनको परिवार प्यारा नहीं था?

मौन।

इस परिप्रेक्ष्य में आप सब तो परिवारों में जकड़े पड़े हो। अब सोचो कि दशरथ का क्या था, उन्होंने अपना वचन निभाने का धर्म अपनाया, चाहे इसके लिये उन्हें अपने प्राण ही क्यों न त्यागने पड़े। प्राण त्याग दिए पर धर्म नहीं हारा। यहाँ आजकल तो इन्सान दस रुपये के पीछे ही अपना धर्म हार जाता है। इसलिए सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि कलुकाल की हालत बिगड़ गई है। ज़रा सा भी लोभ दिखाने पर इंसान धर्म हार जाता है क्योंकि धर्म के प्रति सचेती नहीं है, मानवता का ज्ञान नहीं है।

इस विषय में सजनों धर्मधारी किसकी आज्ञाओं का पालन करता है, यह हमें ज्ञात होना चाहिये। जानो धर्मधारी कुदरत की आज्ञाओं का पालन करता है यानि जो कुदरती ज्ञान होता है वह उसी अनुसार ही अपना जीवन-यापन करता है। इसलिए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ की नीति है कि बाल अवस्था से ही कुदरती ज्ञान प्राप्त करो। कुदरती ज्ञान अनुसार

जीवन चलाने से क्या लाभ होता है? - जानो, जो भी कुदरती ज्ञान अनुसार जीवन चलाता है वह विवेकशील हो जाता है। इसीलिए चैत्र के यज्ञ पर इस बार पहले दिन कुदरत से परिचय कराने का निश्चय लिया गया है ताकि उस कुदरती ज्ञान को धारण करने हेतु हमारा ख़्याल जाग्रति में आए और हमारी बुद्धि उस कुदरती ज्ञान को प्राप्तकर विवेकशील हो जाये। विवेकशील यानि हम सत्य-असत्य के परख करने वाले पारखी बन जायें और जो भी धारें वह सत्य ही हो। इस तरह सतवादी बन हम हर क्षण एकता, एक-अवस्था में बने रहें। इससे हमारी बुद्धि निर्मल हो जायेगी, हमारी स्मृति निर्मल हो जायेगी और हमारे स्वभावों का ताना-बाना निर्मल हो जायेगा। सजनों निर्मलता के प्रतीक बनने पर ही हम सत्य का बोध करने के योग्य बन पाएंगे। ठीक उसी तरह जिस तरह निर्मल जल में कुछ भी डालने पर उसका साक्षात, स्पष्ट प्रतिबिम्ब नजर आता है। इस तरह सजनों जब हमारा हृदय सचखण्ड हो गया तो फिर सत्यबोध कैसे नहीं होगा। हम फिर क्योंकर अज्ञान धारेंगे, क्योंकर कुसंगति में उलझेंगे, क्योंकर मनुराज का खेल रचेंगे? - निःसंदेह तब ऐसा नहीं होगा क्योंकि जब इन्सान कुदरती ज्ञान धारणकर विवेकशील हो जाता है तो वह स्वतः ही जान जाता है कि एक जोत का प्रकाश ही सबके अन्दर है। इस तरह कुदरती ग्रन्थ धारण कर वह आत्मज्ञानी हो जाता है।

इस सन्दर्भ में सजनों यज्ञ पर तीसरे दिन यही बताने का प्रयास होगा। आगे ज्ञात हो कि आत्मज्ञानी सदा आत्मलीन रहते हुए जो भी करता है वह जगत कल्याण हेतु समयबद्ध करता है। इस संदर्भ में वह अनथक परिश्रम से भी नहीं घबराता न ही वह शरीर से हारता है क्योंकि वह शरीर के आकर्षण से ऊपर उठ जाता है, जहाँ पर फिर ज्ञानेन्द्रियों-कर्मेन्द्रियों की पहुँच नहीं होती। बस, यही होता है अपने स्वरूप में स्थित हो जाना। सजनों आज अपने स्वरूप में स्थित हो जाना, कलियुग के मानवों के लिए बहुत बड़ा सवाल बन गया है क्योंकि आज का मानव नैतिक पतनता की गर्त में इतना गिर चुका है उससे निकलने का उसमें साहस ही नहीं है। समझो मानव को इस अनैतिक चलन चलने वाला व अनैतिक व्यवहार करने वाला दुर्बल इन्सान किसने बनाया? - निःसंदेह मन ने बनाया जो कि जगत से हारने का सूचक है। जब जगत से ही हार गये तो अब हम वही करते हैं जो जगत कहता है। आशय यह है कि अपनी हार का हमें एहसास ही नहीं है इसलिए तो निरादर भरा जीवन जीते हैं। चाहे बाहर से शानोशौकत दिखती है पर अन्दर से कँगाली होती है। अब यह हार विजय में परिवर्तित हो, कुछ वैसा ही आध्यात्मिक क्रान्ति द्वारा करने का

प्रयास इस चैत्र के यज्ञ पर होना है। सजनों यह ज्ञान-प्रवाह विधिवत् चलेगा यानि कुदरत से ज्ञान प्राप्त कर आपको विवेकशील बनना है और अपने यथार्थ को समझना है। जब अपना यथार्थ समझ आ गया तो प्रभु प्रगट हो जाएंगे। अतः यज्ञ की महत्ता के दृष्टिगत बहुत ही धैर्य और एकाग्रचित्तता से अफुर होकर बैठना है ताकि आप पूरा लाभ उठा सको। हो सकता है पहले दो दिन कुछ अधिक समय लग जाये परन्तु जब आत्मिकज्ञान की वर्षा होती है तो ठण्डक महसूस होती है, विश्राम का अनुभव होता है। फिर विश्राम से ही सब कुछ धारण होता है। अतः उस दिन हर सजन ने सचेत रहते हुए विश्राम अवस्था में एकाग्रचित्त होकर बैठना है यानि ख़्याल को दुनियाँ से हटाकर अफुर रहना है क्योंकि यह मौका आपके पास पहली बार आने वाला है। ऐसा करना इसलिये भी आवश्यक समझा गया क्योंकि अब संक्रमण काल चल रहा है और कलियुग सतयुग में प्रवेश कर रहा है। अब डूबने या तरने का फैसला होना है, अतः यही सही समय है अपना जीवन बनाने का। यदि डूबना चाहते हो तो डूबे रहो, सोते रहो, फुरनों में रहो और ध्यानपूर्वक कुछ भी मत सुनना और अगर तरना चाहते हो तो जागृति में सचेत बने रहना। अगर सचेती में कुछ फर्क लगने लगे तो पास में कुछ खाने को रख लेना ताकि पुनः सचेत हो जाए और आत्मज्ञान की वर्षा आपके दामन को पावन कर दे। सजनों जिसने निश्चित रूप से यह कर लिया, वह निःसन्देह चार दिन में पावनता का प्रतीक बन जायेगा। बशर्ते कि जो यज्ञ पर सुना है उसके पश्चात वह उसकी दोहराई करते हुए अपने ऊपर नियन्त्रण रखे और खुद को तदनुकूल साधे यानि सदा सतर्क रहें कि मुझ द्वारा जीवन में जो भी मन-वचन-कर्म द्वारा हो, वह सब शास्त्र अनुसार वैसा ही हो। सजनों ऐसा करने पर फतह ही फतह होगी और आप कदापि धर्म नहीं हारोगे अल्कि आप तो धर्म मार्ग पर कुर्बान हो जाओगे। याद रखो सजनों शरीर से प्यार खतरनाक है क्योंकि शरीर से प्यार जीव को पुनः शरीर में ले जाता है। ज्ञात हो कि प्यार सदा ऊँचाईयों को छूना चाहिये। ऊँचाईयों को छूने का तात्पर्य है कि ख्याल/सुरत ईष्वरीय प्रेम के बलबूते पर गगनमण्डल में प्रवेश कर जाये। यह ख़्याल/सुरत का ज्ञानेन्द्रियों व कर्मेन्द्रियों से टप्पा मारकर गगनमण्डल को छू, वहीं स्थित हो जाने का प्रतीक है। फिर सजनों जब सुरत वहाँ स्थित हो गई तो ब्रह्मनाद का अनुभव होना शुरु हो जायेगा। इस सन्दर्भ में सजनों एक बार सुरत को वहाँ स्थित करके तो देखो, फिर कह उठोगेः-

ऐसे आनन्द दा सीमा न कोई हर जगह हर्षाऊँ मैं

अर्थात् सब में अपना आप ही नज़र आयेगा। ऐसा होने पर आप सजनता के प्रतीक बन जाओगे यानि हम भी सजन, तुम भी सजन और सब सजन मित्र हो जाओगे। तो आ गया न मज़ा? अब यह जीवन की बाज़ी जीतने अथवा हारने का सवाल है। इस बार आपका जीवन दाँव पर है। यह यश या अपयश को प्राप्त होने का सवाल है क्योंकि इस यज्ञ के दौरान जितना भी आद् ज्ञान है उसका हर पहलू आपके सम्मुख आ जाना है। इसीलिए बार-बार आवाहन दिया जा रहा है कि अपने परिवार के हर सदस्य को चार दिनों के लिये लाना है। इसमें कमजोर मत पड़ना। अपने प्रियजनों के साथ सजनता दिखाना। सभी खुशी में आ जाओ, सोच में कोई भी मत आना कि कैसे होगा क्योंकि सब सम्भव है। सकारात्मक भाव में रहना। जब सजन श्री शहनशाह हनुमान जी हमारे अंग-संग हैं तो सब सम्भव है। अभी से सकारात्मक भाव में मजबूत बने रहते हुए इसी भाव से यज्ञ पर आना। फिर धीरे-धीरे जिस प्रकार आध्यात्मिक क्रान्ति आगे बढ़ेगी तो आप यह कमाल देखोगे कि किस प्रकार नकारात्मकता सकारात्मकता में तबदील होती जा रही है। अतः आध्यात्मिक क्रान्ति के तहत् स्वाभाविक परिवर्तन ला सद्भावों पर डटे रहना। ऐसा करने से अन्त आप परमधाम पहुँच सुनिश्चित रुप से विश्राम पा जाओगे और अमीरों के अमीर कहलाओगे। अब ध्यान से सुनोः-

(श्री रामचन्द्र जी के मुख के शब्द)

गोदी दे विच बैठ गया बैठा साजन मेरा।

गरुड़ ते साजन आ ही रिहा, लक्ष्मी संग ओ जेहड़ा।

उँगली में सज रही हीरे वाली मुन्दरी, गल जड़ाऊ गानी।

साजन मेरे दी हां हां एहो है निशानी।।

पीले वस्त्र गल बैजन्ती माला, सिर ताज हीरे वाला जानी।

साजन मेरे दी हां हां एहो है निशानी।।

संख चक्र गदा पद्यम धारी, सर्गुण में कुर्सी ऊपर मानी।

साजन मेरे दी हां हां एहो है निशानी।।

निर्वाण दे अन्दर जोत जगे, जोत हर अन्दर पहचानी।

साजन मेरे दी हां हां एहो है निशानी।।

अब यह सुनने के बाद कौन-कौन मजबूत हुआ है?

'सभी ने हाथ खड़े किये'।

अगर मजबूत हुए हो तो जोर से बोलनाः

आध्यात्मिक क्रान्ति ज़िन्दाबाद

आध्यात्मिक क्रान्ति ज़िन्दाबाद

आध्यात्मिक क्रान्ति ज़िन्दाबाद

सजनों अगर आपने हिम्मत दिखाई, तो जैसा कुदरत चाहती है आपका ख़्याल दसवें द्वार में प्रवेश कर, अपने सच्चे घर में स्थित हो जाएगा। फिर मन की आकर्षण शक्ति उसको अपने वश में नहीं कर सकेगी। इसके बारे में भी बाद में आपको विस्तृत रूप से बताया जायेगा ताकि आपका ख़्याल नीचे न गिरे। सजनों जानो कि यह कुदरती साईन्स है। कुदरती साईन्स के ज्ञाता का ख़्याल कभी नीचे नहीं गिरता। अब बताओ कि ख़्याल कैसे और क्योंकर नीचे गिरता है?

मौन।

इसी तरह अगर भौतिक वस्तु को पकड़ा हुआ है तो वह अपने यथा स्थान पर स्थित है परन्तु जैसे ही उसे छोड़ दिया जाता है तो वह नीचे क्यों गिरती है, ऊपर क्यों नहीं जाती? - क्योंकि धरती में नीचे खींचने की गुरुत्वाकर्षण शक्ति है। इस संदर्भ में वस्तु की बात तो ठीक है पर हमें तो ऊपर उठना है। चूंकि वस्तु तो उपजती ही धरती से है इसीलिए धरती में इसे नीचे खींचने की शक्ति निहित है। इसी प्रकार मन में ख़्याल को नीचे फैंकने की शक्ति है। जब ख़्याल ज्ञानेन्द्रियों के जाल में उलझता है तो वह मन की परिसीमा यानि परिधि में आ जाता है। अब मन जिसके अन्दर खींचने की शक्ति है वह उस ख़्याल

को नीचे की ओर खींचता है। मन की इसी गति पर हमने नियन्त्रण रखना है और अपनी ताकत द्वारा उसे ऊपर उठाना है। इसके लिए बस पाँच ज्ञानेन्द्रियों व पाँच कर्मेन्द्रियों का टप्पा मारना है ताकि मन बेबस हो जाये। मन को जीत लिया तो समझो जग जीत लिया क्योंकि शास्त्र कहता है, 'मन जीते जग जीत'। जानो मन अपने आप में सूक्ष्म जगत है। इस सूक्ष्म मानसिक जगत से ऊपर उठना है। इससे कुदरती साईन्स और भौतिक साईन्स दोनों का पता चल जाएगा। यह सब आपको गहराई से भी समझा देंगे। बस आप एक दफा अन्दर से इसके लिए पूरी तरह से तैयार हो जाओ कि चाहे कुछ भी हो जाये हमने सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने के नाते जीवन सफल बनाना ही बनाना है। इसी विचार पर डट जाओ और तद्नुसार कहना मानते जाओ। यही कुदरती साईन्स का तरीका है तभी यज्ञ का प्रथम दिन 'कुदरत' को दे रहे हैं। हमें तो कुदरत का जो निर्देश होता है, हम वही कर देतें हैं क्योंकि हमने कुदरत के हाथों स्वयं को सौंपा हुआ है। अब आगे सुनोः-

(सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के मुख के शब्द)

— कवित्त —

हिम्मत दिखाई ओ जावो हिम्मत वधाई ओ जावो।

हिम्मत न हारनी ओ बेटा, हिम्मत बढ़ाई ओ जावो।।

विचार पकड़ना सिखाई ओ जावो, सत बोलना समझाई ओ जावो।

सच होवे ज़बान ओ बेटा, धर्म दा रस्ता बतलाई ओ जावो।।

सजनां नूं एकता वी दिखाई ओ जावो।

इक निगाह एक दृष्टि ते हिम्मत बढ़वाई ओ जावो।

नीतियां ते चलने का तरीका ओ बेटा, एहो सजनां नूं समझाई ओ जावो।।

हिम्मत बढ़ाई ओ जावो, एहो तरीका सारी विश्व नूं सुनाई ओ जावो।

हिम्मत है जगजीत मीतां दी ओ मीत बेटा।

ए सौखा तरीका दे के सब नूं हर्षाई ओ जावो।।

(अब श्री साजन जी सजनों को कह रहे हैं)

हिम्मत जेहड़ा लड़ावे इन्सान, ओ असलियत दी कर लवे पहचान।

इन्सान हो तो इन्सानी दिखाओ, ओ सजनों हिम्मत है जे बड़ी महान।।

इन्सान हो तो इन्सानी दिखाई ओ जावो, ओ सजनों हिम्मत बढ़ाई ओ जावो।

फिर दिव्य दृष्टि दा सबक़ लै के, मेल महाराज नाल खाई ओ जावो।।

हिम्मत है जे ओ जैंदे पास, हिम्मत है जे ओ अपना आप प्रकाश।

ओ प्रकाश दिखाई ओ जावो, त्रिकालदर्शी नाम कहाई ओ जाओ।।

फिर रूप रंग न रेखा कोई, निर्वाण दे अन्दर प्रकाश सोई।

बिन सूरजों प्रकाश आद अन्त, प्रकाश ही प्रकाश दिखाई ओ जावो।।

शब्दः-

जेहड़ा प्रकाश है जे मन मन्दिर, ओही प्रकाश सारे जग अन्दर।

एक निगाह एक दृष्टि, ओ एक दर्शन ओ एक दर्शन।।

हम सोच रहे थे कि आज का इन्सान अपने आप को इतना मजबूर क्यों पाता है कि परमार्थ की ओर बढ़ने का उसमें साहस ही उत्पन्न नहीं होता? जानो दुनियाँ में इतना अधिक गलतान होना नादानी है। क्यों न इस नादानी से उबरने के लिए हम सच्चेपातशाह जी ने समभाव-समदृष्टि होने के प्रति सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की जो युक्तियाँ बख़्शी हैं, उन युक्तियों को प्रवान करते? क्यों कर हम समभाव-समदृष्टि होकर दिव्य दृष्टि का सबक़ लेने में पिछड़ रहे हैं? सजनों जानो जिसको भी दिव्यदृष्टि का सबक़ मिल जाता है वह

इन्सान त्रिकालदर्शी हो जाता है। त्रिकालदर्शी कौन है? - भगवान। सो त्रिकालदर्शी अपने यथार्थ स्वरूप, यथार्थ हस्ती को जान जाता है और अजरता-अमरता को पहचान जाता है। फिर उसे अनुभव होना आरम्भ हो जाता है कि मैं कुछ और नहीं अपितु जो 'आत्मा में परमात्मा' है, वही हूँ। यहाँ आकर जगत का खेल समाप्त हो जाता है। इस तरह हम शास्त्र के वचनानुसार जगत का खेल खेलते हुए विजयी होकर अपने घर परमधाम शान से पहुँच विश्राम को पाते हैं और तीनों लोकों में यश-कीर्ति को प्राप्त करते हैं। बस, इतना सा ही करना है। इस सन्दर्भ में मानो कि हर मानव की बनत कुदरत ने ऐसी बनाई है कि अपने जीवन का यह शुभ परिणाम लेने हेतु वह निश्चित रूप से समर्थ है। पर अपनी समर्थता को जानोगे तभी यह सम्भव है। वही समर्थता जनाने के लिये चैत्र के यज्ञ पर आपको कुदरत की रमज़ बताई जायेगी। आपकी विवेकशक्ति को जाग्रत करने का प्रयास किया जायेगा तभी आप यथार्थ की पहचान यानि विराट दर्शन से उबर सूक्ष्म घर पहुँच विश्राम को पाओगे। इसी संदर्भ में अब जोर से बोलोः-

आध्यात्मिक क्रान्ति ज़िन्दाबाद

आध्यात्मिक क्रान्ति ज़िन्दाबाद

आध्यात्मिक क्रान्ति ज़िन्दाबाद

सजनों अभी आपने सृष्टि का सत्य सुना कि हम सब एकरूप हैं और हमारा सत्य भी यही है। तो जो हमारा ख़्याल अनेक रूपता में भटक गया है और वहीं पर अटका पड़ा है, उसको वहाँ से हटाकर आद् सत्य के संग जोड़ना है और यह मानना है कि हम सभी एकरूप हैं। अतः हमारे लिए बनता है कि हम परस्पर सजनता का व्यवहार करते हुए सर्व-हित हेतु जीवन को समर्पित कर दें और सांसारिकता से ऊपर उठ परमार्थ बन जाए। जानो परमार्थ को अपनाने का यह अन्तिम अवसर है। अतः हिम्मत दिखाओ और फतह पा जाओ।

आप सभी ऐसा करने में कामयाब हों इन्हीं शुभकामनाओं सहित आने वाले चैत्र के यज्ञ की सबको बधाई हो।